E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान

डॉ. सीताराम सिंह तोमर

प्राचार्य, महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14467324

सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। देश के लगभग 70 प्रतिशत आबादी का मुख्य आधार कृषि है क्योंकि खाद्यान्न आपूर्ति के साथ एक बहुत बड़ी आबादी को कृषि क्षेत्र से ही रोजगार प्राप्त होता है। भारत के समक्ष आज भी खाद्यान्न असुरक्षा तथा कुपोषण की समस्या का विकराल रूप बना हुआ है। वर्ष 2019–20 के लिए मौजूदा कीमतों पर सकल योजित मूल्य में कृषि तथा संबंध क्षेत्रों का योगदान 17.8 प्रतिशत है। हालांकि वर्ष 2020–21 के दौरान संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए जीवीए–7.2 प्रतिशत से सिकुड़ गया, तथापि कृषि क्षेत्र के लिए जीवीए के विकास ने 3.4 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि दर बनाये रखी है। भारत में वर्ष 2019–20 के अग्रिम अनुमान में कुल खाद्यान्न का उत्पादन 296.65 मिलियन टन अधिक था जो वर्ष 2018–19 से 11.44 मिलियन टन अधिक था, किन्तु कृषि के समक्ष अनेक चुनौतियाँ है, जिसके कारण कृषि विकास की प्रगति को नकारा नहीं जा सकता है। आज वैश्विक महामारी की मंदी से बचने तथा खाद्यान्न सुरक्षा में सतत् पर्यावरणीय विकास के साथ मिलेनियम डेवलपमेन्ट के लक्ष्य की प्राप्ति में कृषि विकास की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन भारत में कृषि विकास की स्थिति पर केन्द्रित होकर कृषि फसलों के क्षेत्र उत्पादन, उत्पादकता एवं कृषि विकास, वृद्धि दर की स्थिति का विश्लेषण की स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

की–वर्ड – कृषि विकास, वार्षिक वृद्धि दर, फसल प्रतिरूप, उत्पादन एवं उत्पादकता, आयात–निर्यात।

प्रस्तावना

कृषि भारत का ही नहीं दुनिया का सबसे बड़ा एवं सबसे पुराना व्यवसाय है। भारत में लगभग 70% लोग कृषि पर निर्भर है। कृषि मानव की खाद्य एवं अखाद्य दोनों आवश्यकता को पूरा करने का बुनियादी आधार

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

है। पिछले कुछ दशकों से भारतीय कृषि में आधुनिक तकनीक के कारण तीव्र गति से विकास हुआ है। आज भारत कृषि विकास के बहुआयाम को प्राप्त करने के साथ वैश्विक पटल पर कृषि उत्पादन की स्थिति में अपनी मजबूती से आगे बढ़ रहा है लेकिन भारत आज जहां खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बन चुका है वहीं भारत के समक्ष आज भी खाद्यान्न असुरक्षा तथा कुपोषण की समस्या का विकराल रूप बना हुआ है। यद्यपि कोविड–19 महामारी ने कृषि विकास की स्थिति पर विपरीत प्रभाव डाला है लेकिन अपने लचीलापन से सतत् कीमतों पर 3.4 प्रतिशत के विकास दर के साथ कृषि तथा संबंध क्षेत्र में एकमात्र उज्ज्वल स्थान है। वर्ष 2019–20 के लिए मौजूदा कीमतों पर सकल योजित मूल्य में कृषि तथा संबंध क्षेत्रों का योगदान 17.8 प्रतिशत है जबकि वर्ष 2014–15 में 18.2 प्रतिशत का योगदान था। यह एक विकास प्रक्रिया का अपरिहार्य परिणाम है। कृषि तथा संबंध क्षेत्रों में समय के साथ उतार–चढ़ाव की स्थिति निर्मित रही है। हालांकि वर्ष 2020–21 के दौरान संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए जीवीए–7.2 प्रतिशत की दर से सिकुड़ गया, तथापि कृषि क्षेत्र के लिए जीवीए के विकास ने 3.4 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि दर बनाये रखी है। भारत में वर्ष 2019–20 के अग्रिम अनुमान में कुल खाद्यान्न का उत्पादन 296.65 प्रतिशत मिलियन टन रहा है जो वर्ष 2018–19 के 285.21 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन से 11.44 मिलियन टन अधिक था। भारत में वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों के सूत्रपात के बाद से भारत कृषि उत्पादों का शुद्ध निर्यातक रहा है। वर्ष 2019–20 में भारत में 2.52 लाख करोड़ रूपये के कृषि उत्पादों का निर्यात किया गया जबकि 1.47 लाख करोड़ रूपये के कृषि उत्पादों का आयात किया। इस तरह से भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि रीढ़ है। आज कृषि एक उद्यम के रूप में की जाती है। किन्तु कृषि के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं जिसके कारण कृषि विकास की गति धीमी है। लेकिन फिर भी कृषि विकास की प्रगति को नकारा नहीं जा सकता है। आज वैश्विक महामारी की मंदी से बचने तथा खाद्यान्न सुरक्षा में सतत् पर्यावरणीय विकास के साथ मिलेनियम डेवलपमेन्ट के लक्ष्य की प्राप्ति मे कृषि विकास की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्त्व का पता लगाना।
- सकल घरेलू उत्पादन में कृषि के योगदान का आंकलन करना।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

- भारत में कृषि विकास की स्थिति का अध्ययन करना।
- भारत में खाद्य–फसलों का उत्पादन, क्षेत्र तथा उत्पादकता की स्थिति का अध्ययन करना।
- भारत में खाद्यान्न उत्पादन का भविष्य में उत्पादन संभावनाओं का आंकलन करना।
- भारत में कृषि विकास की नीति–निर्माण हेतु सुझाव देना।

शोध–प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध संरचना के आधार पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें अध्ययन हेतु द्वितीयक समंकों का उपयोग किया गया है और इन समंकों का वर्गीकरण, विश्लेषण किया गया है।

भारतीय कृषि की विशेषताएँ

भारतीय कृषि की कुछ उल्लेखनीय विशेषताएँ अग्रलिखित हैं –

- **जीविका कृषि :** भारत के अधिकांश क्षेत्र पर आजीविका हेतु कृषि की जाती है। किसान अपनी जमीन पर अपने परिवार के भरण–पोषण हेतु परिवार के सदस्य की सहायता से कृषि उत्पादन करता है और अपने द्वारा उगाए गए सभी खाद्य पदार्थों का उपयोग अपने लिए करता है, उपयोग के अतिरिक्त कृषि को बाजार में बेचता भी है।
- **फसलों की विविधता :** भारत एक विशाल देश है, जिसमें मौसम की विविधता के साथ–साथ मिट्टी में भी विविधता पाई जाती है। मिट्टी की विविधता के कारण ही यहाँ पर विभिन्न प्रकार की फसलों की पैदावर होती है। यहाँ की जलवायु में समशीतोष्ण एवं ऊष्णकटिबंधीय दोनों ही विशेषताएँ पाई जाती हैं, यही कारण है कि यहाँ पर समशीतोष्ण एवं ऊष्णकटिबंधीय दोनों प्रकार की फसलें अच्छी तरह से उगाई जाती हैं। संसार मे कुछ ही देश ऐसे हैं जो भारत जैसी फसलें उगाने में समर्थ हैं।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

- **खाद्य फसलों का प्रचलन :** भारत में आजीविका का प्रमुख साधन कृषि ही है अतः यहाँ पर अधिकांश क्षेत्र पर खाद्य फसलों को ही उगाया जाता है। खाद्य फसलें ही देश के सम्पूर्ण कृषकों का शीर्ष लक्ष्य होता है। भारत में कुल बोई गई फसलों का दो तिहाई हिस्सा खाद्य फसलों का होता है।
- **मानसून पर निर्भरता :** भारतीय कृषि मुख्य रूप से मानसून पर निर्भर है, इसलिए भारतीय कृषि में अनिश्चितता बनी रहती है क्योंकि मानसून अनिश्चित, अप्रत्याशित एवं असंगत है। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कृषि सिंचाई की नवीन प्रणालियों का बड़े पैमाने पर विकास हुआ किन्तु यह एक तिहाई भूमि पर हो सका। आज भी दो तिहाई कृषि मानसून पर निर्भर है।
- **पशुओं का मूल्य :** भारत में प्राचीन काल से ही जुताई, थ्रेसिंग, सिंचाई एवं कृषि माल ढोने जैसे अनेक कृषि कार्यों में पशु शक्ति का लम्बे समय से प्रयोग होता रहा है, किन्तु वर्तमान में तकनीक के विकास के साथ ही कृषि में भी मशीनों का प्रयोग होने लगा है और पशु शक्ति का प्रयोग कम होने लगा है किन्तु आज भी भारत में कृषि के क्षेत्र में पशुधन अपनी अहम् भूमिका रखता है।

तालिका क्रमांक– 01

भारत में खाद्यान्न की स्थिति

(उत्पादन : मिलियन टन)

वर्ष	चावल	गेंहू	ज्वार	बाजरा	मक्का	अनाज	दालें	खाद्यान्न अनाज
2010–11	95.98	86.87	7	10.37	21.73	226.25	18.24	244.49
2011–12	105.3	94.88	5.98	10.28	21.76	242.2	17.09	259.29
2012–13	105.23	93.51	5.28	8.74	22.26	238.78	18.34	257.12
2013–14	106.65	95.85	5.54	9.25	24.26	245.79	19.26	265.05
2014–15	105.48	86.53	5.45	9.18	24.17	234.87	17.15	252.02

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

2015–16	104.41	92.29	4.24	8.07	22.57	235.22	16.32	251.54
2016–17	109.7	98.51	4.57	9.73	25.9	251.98	23.13	275.11
2017–18	112.76	99.87	4.8	9.21	28.75	259.6	25.42	285.01
2018–19	116.48	103.6	3.48	8.66	27.72	263.14	22.08	285.21
2019–20	118.43	107.59	4.73	10.28	28.64	273.5	23.15	296.65
Mean	**108.04**	**95.95**	**5.107**	**9.377**	**24.776**	**248.46**	**20.018**	**267.15**
2020–21 1st Advance Estimates	102.36		1.75	9.23	19.88	135.21	9.31	144.52
CAGR	**36.50 %**	**35.41 %**	**- 3.84 %**	**- 0.09 %**	**21.32 %**	**47.04 %**	**17.25 %**	**48.50 %**

Source: https://agricoop.nic.in/sites/default/files/First Estimate 2020-21/pdf

तालिका क्रमांक– 02

भारत में प्रमुख खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में वार्षिक वृद्धि दर की स्थिति

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

वर्ष	चावल	गेंहू	ज्वार	बाजरा	मक्का	अनाज	दालें	खाद्यान्न अनाज
2010–11	-	-	-	-	-	-	-	-
2011–12	9.71%	9.22%	-14.57%	-0.87%	0.14%	7.05%	-6.30%	6.05%
2012–13	-0.07%	-1.44%	-11.71%	-14.98%	2.30%	-1.41%	7.31%	-0.84%
2013–14	1.35%	2.50%	4.92%	5.84%	8.98%	2.94%	5.02%	3.08%
2014–15	-1.10%	-9.72%	-1.62%	-0.76%	-0.37%	-4.44%	-10.96%	-4.92%
2015–16	-1.01%	6.66%	-22.20%	-12.09%	-6.62%	0.15%	-4.84%	-0.19%
2016–17	5.07%	6.74%	7.78%	20.57%	14.75%	7.13%	41.73%	9.37%
2017–18	2.79%	1.38%	5.03%	-5.34%	11.00%	3.02%	9.90%	3.60%
2018–19	3.30%	3.73%	-27.50%	-5.97%	-3.58%	1.36%	-13.14%	0.07%
2019–20	1.67%	3.85%	35.92%	18.71%	3.32%	3.94%	4.85%	4.01%

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

Source: https://agricoop.nic.in/sites/default/files/First Estimate 2020-21pdf

तालिका क्रमांक– 03

भारत में प्रमुख खाद्यान्न फसल का क्षेत्र, उत्पादन एवं उपज की स्थिति

फसल	क्षेत्र लाख हैक्ट.			उत्पादन मिलियन टन			उपज किलोग्राम/हैक्ट.		
	2017–18	2018–19	2019–20	2017–18	2018–19	2019–20	2017–18	2018–19	2019–20
चावल	437.7	441.6	437.8	112.8	116.5	118.4	2576	2638	2705
गेहूं	296.5	253.2	314.5	99.9	103.6	107.6	3368	3533	3421
मोटा अनाज	242.9	221.5	240.2	47.0	43.1	47.5	1934	1944	1976
दालें	298.1	291.6	283.4	25.40	22.1	23.20	853	757	817
खाद्यान्न अनाज	1275.2	1247.8	1275.9	285.00	285.2	296.6	2235	2286	2325

Source: Annual Report 2020-21 of Department of Agriculture, Cooperation & Farmers welfare (https://agricoop.nic.in/sites/default/files/Web%20copy%20of%20AR%20%28Eng%29.pdf)

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

आर्थिक विकास में कृषि का योगदान

भारत के आर्थिक विकास में कृषि की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। भारत के आर्थिक विकास में उद्योगों के साथ ही कृषि भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत के आर्थिक विकास में कृषि के महत्त्व को निम्न बिन्दुओं में व्यक्त किया जा सकता है –

- **खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति** : भारत की बढ़ती जनसंख्या में खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति कृषि द्वारा ही होती है। वर्तमान में कृषि में नवीन तकनीकी का प्रयोग बढ़ रहा है तभी बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्य पूर्ति संभव हो सकी है। यदि कृषि अपने खाद्यान्न की बिक्री में लगातार वृद्धि नहीं कर सकेगी तो खाद्यान्न की गम्भीर समस्या उत्पन्न हो जायेगी। अतः बढ़ती हुई जनसंख्या के खाद्यान्न की पूर्ति हेतु कृषि में लगातार सुधार की आवश्यकता बनी हुई है।
- **ग्रामीण कल्याण को बढ़ावा देना** : कृषि से ग्रामीण कल्याण संभव है। कृषि की अधिक पैदावार एवं नवीन कृषि अति आवश्यक है जिससे ग्रामीण जन अन्यत्र पलायन न करें। कृषि अधिशेष से ग्रामीण क्षेत्रों का तो कल्याण होता ही है साथ ही सामाजिक कल्याण में भी वृद्धि होती है।
- **पूँजी निर्माण में सहायक** : कृषि केवल किसानों के लिए ही सहयोगी नहीं है बल्कि यह पूँजी निर्माण में भी सहायक है। भारत जैसे विकासशील देश में कृषि सबसे महत्त्वपूर्ण उद्योग है। आर्थिक विकास में कृषि पूँजी निर्माण में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यदि कृषि पूँजी निर्माण में सहयोगी नहीं बन सकी तो आर्थिक विकास की प्रक्रिया का गहरा झटका लग सकता है।
- **कृषि आधारित उद्योगों को कच्चा माल** : कृषि आधारित उद्योगों को कच्चा माल कृषि द्वारा ही प्राप्त होता है जैसे–चीनी उद्योग, कपड़ा उद्योग, जूट उद्योग, वनस्पति उद्योग आदि के लिए कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए भी कृषि आवश्यक है। डेयरी उद्योग भी प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर ही आधारित है। अतः इन उद्योगों के विकास के लिए कृषि अति महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

- **बुनियादी ढाँचे का विकास :** भारत के आर्थिक विकास में कृषि अनिवार्य है और कृषि के विकास के लिए सड़कों, बाजार, गोदाम, शिंपिंग आदि घटकों के निर्माण की आवश्यकता है तभी उद्योगों एवं व्यापार जगत का विकास संभव हो सकता है अतः कृषि उद्योग एवं व्यापार का बुनियादी ढाँचा है।
- **औद्योगिक उत्पादन :** औद्योगिक विकास के लिए कृषि का विकास आवश्यक है। कृषि विकास से ही ग्रामीण क्षेत्रों में क्रय शक्ति में वृद्धि होगी, जब ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति में वृद्धि होगी तभी औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि होगी क्योंकि भारत में दो–तिहाई जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। हालांकि हरित क्रांति एवं श्वेत क्रांति की वजह से किसानों की व्यय एवं क्रय शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है क्योंकि उनके राजस्व में वृद्धि हुई है।

सकल घरेलू उत्पादन (GDP) में कृषि का योगदान

भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में कृषि का सकल घरेलू उत्पादन (GDP) में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का प्रतिशत योगदान क्षेत्र के स्वास्थ्य एवं देश के समग्र आर्थिक प्रदर्शन पर इसके प्रभाव का महत्त्वपूर्ण संकेतक है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में कृषि कुल सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 17% का योगदान देती है और लगभग 58% जनसंख्या को रोजगार प्रदान करती है। पिछले कई दसकों में भारतीय कृषि में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिसमें खाद्यान्न उत्पादन 1950–51 में 51 मिलियन टन (MT) से बढ़कर 2011–12 में 250 MT हो गया जो स्वतंत्रता के बाद का उच्चतम स्तर है। 2020–21 में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान बढ़कर 19.9% हो गया जो 2019–20 में 17.8% था।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने हाल ही के वर्षों 2020–21, 2021–22 एवं 2022–23 के राष्ट्रीय आय के अनुमान जारी किए है। इन अनुमानों से कुल अर्थव्यवस्था में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के सकल मूल्य वर्धन (GVA) की हिस्सेदारी एवं दिए गए वर्षों के लिए कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के सकल मूल्य वर्धन (GVA) की वृद्धि का पता चलता है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

तालिका क्रमांक–04

सकल मूल्य वर्धन (GVA) – 2020–23

वर्ष	कुल अर्थव्यवस्था में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के GVA का हिस्सा (%) (वर्तमान मूल्यों पर)	कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों की GVA वृद्धि (%) (2011–12 मूल्यों पर)
2020–21	20.3	4.1
2021–22	19.0	3.5
2022–23	18.3	3.3

स्रोत : ये आँकड़े तत्कालीन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने 2023 में लोकसभा में एक लिखित जवाब में साझा किए थे।

भारतीय कृषि की चुनौतियाँ

भारतीय कृषि में अनेक चुनौतियाँ हैं। अशिक्षा एवं साधनों के अभाव के कारण भारतीय कृषि आज भी मानसून पर निर्भर है, पुरानी फसल पद्धति, असमान भूमि स्वामित्व, भूमि विखण्डन, असुरक्षित भूमि स्वामित्व जैसी अनेक चुनौतियों से भारतीय कृषि गुजर रही है। इसके अतिरिक्त कृषि मजदूरों की खराब स्थिति, मिट्टी की गुणवत्ता, अपर्याप्त सिंचाई आदि शामिल है। ये चुनौतियाँ उत्पादकता एवं कृषि विकास में बाधक हैं। भारतीय कृषि की प्रमुख चुनौतियाँ अग्रलिखित हैं –

- **परम्परागत कृषि** : भारत में अधिकतर परम्परागत फसलों का उत्पादन ही किया जाता है। भारत में कृषि फसलों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। खाद्य फसलें एवं अखाद्य फसलें। भारत

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

में खाद्य फसलों की खेती अधिकांश भूमि पर की जाती है जबकि अखाद्य फसलों की खेती कम भूमि पर की जाती है, जबकि अखाद्य फसलें आय का बड़ा स्रोत होती हैं।

- **कृषि की अस्थिरता** : भारतीय कृषि मानसून पर निर्भर है और मानसून अस्थिर होता है इस कारण असंगत खाद्यान्न उत्पादन होता है अर्थात् कभी अधिक मात्रा में तो कभी बहुत कम मात्रा में।
- **असमान भूमि वितरण** : भारत में भूमि का वितरण बहुत ही असमान है। अमीर किसानों एवं जमीदारों के पास बहुत अधिक भूमि पाई जाती है जबकि गरीब किसानों के पास बहुत ही कम भूमि होती है या होती ही नहीं है।
- **भूमि का विभाजन** : भारत में बढ़ती जनसंख्या एवं टूटते संयुक्त परिवारों के कारण कृषि भूमि का लगातार बँटवारा हो रहा है इसलिए भूमि छोटे–छोटे खण्डों में विभाजित हो रही है। इसलिए उत्पादन कम हो रहा है। छोटे किसानों का भरण–पोषण नहीं हो पाता है तो वे भूमि का कुछ भाग बेच देते है इसलिए उनकी भूमि और भी कम हो जाती है।
- **सिंचाई सुविधाओं का अभाव** : भारत में आज भी पर्याप्त मात्रा में सिंचाई के साधन उपलब्ध नहीं हो पाए हैं जहाँ सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं भी तो वे महँगे होने के कारण गरीब किसान उनका उपयोग नहीं कर पाते हैं।
- **मशीनीकरण का अभाव** : भारत में आज भी कृषि कार्यों हेतु पूर्ण मशीनीकरण नहीं हो सका है क्योंकि किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वे आधुनिक यंत्र नहीं खरीद पाते हैं। अतः कृषि क्षेत्रों में नवीन कृषि यंत्रों का आज भी अभाव है।
- **कृषि उत्पादन का उचित मूल्य नहीं** : भारत में आज भी किसानों को कृषि उत्पादन का उचित मूल्य नहीं प्राप्त हो पा रहा है। व्यापारी लोग किसानों की मेहनत से उगाई गई फसल को बहुत ही कम मूल्य पर खरीदते हैं और बाद में उसे ऊँचे दामों में बेचते हैं। हमारे देश की सरकारें किसानों पर राजनीति करते हैं वे किसानों की फसल का उचित मूल्य निर्धारित नहीं करतीं हैं।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

- **परिवहन सुविधाओं का अभाव** : भारत में कृषि परिवहन के साधनों का अभाव है जहाँ साधन हैं भी तो वे बहुत महँगे हैं। उनका भाड़ा बहुत अधिक होता है। कभी–कभी तो मण्डी तक लाने में ही इतना भाड़ा लग जाता है कि फसल में मूल्य के बराबर या अधिक हो जाता है।

कृषि विकास हेतु सुझाव

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ कृषि का विशेष महत्त्व है अतः विश्व पटल पर भारत की स्थिति मजबूत करने के लिए भारतीय कृषि के विकास पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। भारतीय कृषि के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

- कृषि का प्रमुख आधार जल है और भारतीय कृषि अधिकतर वर्षा जल पर निर्भर है। वर्षा कम होने पर कृषि भी कम होती है। अतः कृषि हेतु पर्याप्त जल उपलब्ध कराने हेतु सिंचाई की सुविधाओं का पर्याप्त विकास किया जाना चाहिए।
- हरित क्रांति का विकास खाद्यान्न के साथ–साथ अन्य फसलों में भी किया जाना चाहिए।
- हरित क्रांति में तकनीकी घटकों के साथ–साथ संस्थागत परिवर्तनों को भी शामिल किया जाना चाहिए।
- कृषि विकास से सम्बंधित संस्थाएँ जैसे कृषि विभाग, सिंचाई विभाग, पंचायती राज संस्थाएँ, व्यापारिक बैंक, कृषि बैंक, सहकारी समितियाँ आदि में उचित तालमेल होना चाहिए।
- मिट्टी के प्रकार एवं उसकी गुणवत्ता की जाँच करके उसी के अनुसार फसल उगाई जाने की व्यवस्था होना चाहिए ताकि भरपूर फसल पैदा कर आर्थिक विकास में योगदान दिया जा सके।
- कृषकों हेतु फसल प्रतियोगिताएँ लागू की जानी चाहिए जिससे अधिकाधिक उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया जा सके, साथ ही नवोन्वेषी कृषकों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए।
- कृषि विकास कार्य में लगे हुए अधिकारियों को अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करते हुए स्वेच्छा से कृषि विकास में अपना योगदान देना चाहिए।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

- किसानों को कृषि तकनीकी की शिक्षा देना अति आवश्यक है जिससे वे नवीन तकनीक अपनाकर कृषि उत्पादन में वृद्धि कर सकें।
- सरकार का कर्तव्य है कि कृषि उत्पादन का न्यूनतम मूल्य निर्धारित करें ताकि किसान को फसल कम कीमत पर न बेचना पड़े।
- कृषि भण्डारण व्यवस्था कम खर्च में उपलब्ध हो सके, इस हेतु सरकार को प्रयास करना चाहिए।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि सर्वोपरि रही है उससे जुड़े उद्योग भारत की आय का प्राथमिक स्रोत हैं। सस्ते श्रम और कच्चे माल की आपूर्ति में आत्मनिर्भरता के कारण कृषि को निर्यात उद्योग के विभिन्न कृषि उत्पादों में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल है। इसके अतिरिक्त कृषि देशी व्यापार में ही नहीं बल्कि विदेशी व्यापार में भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता में लगातार वृद्धि हो रही है, साथ ही कृषि पर आधारित उद्योगों की संख्या में भी लगातार वृद्धि हो रही है, जो देश की राष्ट्रीय आय का प्रमुख आधार है किन्तु देश का कृषि क्षेत्र आज भी उपेक्षित है जबकि सरकारें उद्योगों हेतु उद्योगपति को अरबों–खरबों का ऋण दे रही है और कृषि क्षेत्र पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अतः सरकारों को अविलंब कृषि विकास हेतु प्रयास करना होगा। शोध–पत्र का निष्कर्ष एवं सुझाव न केवल पिछड़ी हुई कृषि व्यवस्था को सुधारने में सहायक होंगे बल्कि विश्व आर्थिक मंच पर भारत को अलग पहचान दिलाने में कारगर सिद्ध होंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय अर्थव्यवस्था, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (2002)।
2. विकास का अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा (2019), शर्मा टी.आर. वार्ष्णेय।
3. भारतीय अर्थव्यवस्था– डॉ. जे.सी. पंत, डॉ. जे.पी. मिश्रा, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2011.
4. भारतीय अर्थव्यवस्था विश्लेषण एवं बदलता परिदृश्य, डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा, सागर पब्लिशर्स, जयपुर 2018.

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

5. भारतीय अर्थव्यवस्था, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (2002) भारती आर.के.
6. आर्थिक विकास के सिद्धांत एवं भारत में आर्थिक नियोजन, डॉ. जी.एल. गुप्त, वृन्दा पब्लिकेशन मयूर बिहार, दिल्ली 1993.
7. आर्थिक समीक्षा, 2009–2010.
8. कुमार प्रमिला एवं शर्मा श्रीकमल (2023) कृषि भूगोल।
9. न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.), कृषि सहयोग एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार।